क्रान्तिकारी लोक स्वराज्य अभियान के पांचवें चरण की शुरुआत पर

प्रभात फेरियां, नुक्कड़ नाटक, जुलूस एवं सभाएं

गोरखपुर। क्रान्तिकारी लोक स्वराज्य अभियान के पांचवें चरण की शुरुआत पर भागीदार संगठनों–दिशा छात्र समुदाय, नारी सभा, नौजवान भारत सभा और बिगुल मजदूर दस्ता की संयुक्त टोली ने 9 अगस्त से 15 अगस्त तक गोरखपुर महानगर के विभिन्न मुहल्लों–कालोनियों में प्रभात फेरियां निकालीं, घनीभूत जनसम्पर्क किया और पर्चा वितरण किया। इसके अतिरिक्त कुछ सरकारी कार्यालयों में भोजनावकाश के समय नुक्कड़ नाटक 'तमाशा' का मंचन और नुक्कड़ सभाओं का आयोजन भी किया गया।

महानगर के बेतियाहाता चौराहे पर स्थित शहीदे आज़म भगत सिंह की प्रतिमा पर माल्यार्पण और पूंजीवाद-साम्राज्यवाद विरोधी विभिन्न नारों के उद्घोष के साथ अभियान के पांचवें चरण की शुरुआत हुई, जिसके तहत महानगर के साथ-साथ आस–पास के कस्बों-गांवों और पूर्वी उत्तर–प्रदेश के अन्य निकटवर्ती जिलों–देवरिया, महराजगंज, बस्ती, मऊ में भी छात्रों-नौजवानों और मेहनतकश आबादी के बीच क्रान्तिकारी लोक स्वराज्य की सोच और नारों का व्यापक प्रचार-प्रसार का लक्ष्य रखा गया है।

अभियान के इस चरण के अन्तर्गत पूर्वी उत्तर प्रदेश के साथ-साथ राजधानी लखनऊ, नैनीताल और ऊधमसिंह नगर जिलों में विभिन्न इकाइयां तेरहवीं लोकसभा चुनावों के दौरान पूंजीवादी जनतंत्र की असलियत का पर्चों-पोस्टरों, नुक्कड़ नाटकों, नुक्कड़ सभाओं व घनीभूत जनसम्पर्क अभियान के द्वारा भण्डाफोड़ करते हुए जनता के सामने ठोस विकल्प प्रस्तुत कर रही हैं।

इस दौरान वितरित किये जा रहे क्रान्तिकारी लोक स्वराज्य पर्चा संख्या-3 में तमाम ज़िन्दा लोगों का आह्वान किया गया है कि "वे अपनी थकी-हारी मानसिकता को छोड़कर आगे आयें और समूची आम जनता को पराजय, निराशा और निष्क्रियता के अंधेरे रसातल से बाहर आने के लिए ललकारें" और उसके सामने ठोस विकल्प रखें, नयी उम्मीद जगायें। क्योंकि, इतिहास गवाह है कि विकल्प के अभाव और हार की मानसिकता में जी रही जनता "उम्मीद जगने के बाद पूंजीवादी व्यवस्था का क्रिया-कर्म करके ही दम लेती है।"

पर्चे में विकल्प के रूप में मौजूदा पूंजीवादी-साम्राज्यवादी ढांचे को क्रान्तिकारी परिवर्तन द्वारा उखाड़ फेंकने एवं उसके स्थान पर क्रान्तिकारी लोक स्वराज्य का ठोस विकल्प प्रस्तुत किया गया है। पर्चे में इसका अर्थ स्पष्ट करते हुए लिखा है कि "क्रान्तिकारी लोक स्वराज्य का मतलब है कि उत्पादन, राज-काज और समाज की पूरे ढांचे पर उत्पादन करने वाली मेहनतकश आबादी का वास्तविक अधिकार हो और निर्णय लेने की पूरी ताकत उसी के हाथों में हो। जनता को वास्तविक आजादी तभी हासिल हो सकती है जब उत्पादन मुनाफे और बाजार के लिए न होकर सामाजिक आवश्यकता की पूर्ति के लिए हो और उत्पादों का समानतापूर्ण बंटवारा हो।

भगत सिंह जेल नोट बुक का लोकार्पण एवं विचार गोष्ठी

नैनीताल। दिशा छात्र समुदाय की नैनीताल इकाई ने डी०एस०बी० परिसर, कुमायूँ विश्वविद्यालय के इतिहास विभाग के सहयोग से शहीदे आज़म भगत सिंह के जन्म दिवस के अवसर पर विभाग के सभागार में एक विचार गोष्ठी का आयोजन किया, जिसका विषय था : "भगत सिंह की विचार धारा और आज का दौर"।

विचार गोष्ठी के आरम्भ में इतिहास विभागाध्यक्ष प्रो० अजय रावत ने शहीदे आज़म की जेल नोट बुक के हिन्दी संस्करण का लोकार्पण किया। इस अवसर पर उन्होंने कहा कि मौजूदा दौर में भगत सिंह की विचारधारा को न केवल जन-जन में प्रचारित करने की जरूरत है वरन् उसे व्यावहारिक कार्यों में रूपान्तरित करने की जरूरत है।

कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे पन्तनगर कृषि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिक बी० के० सिंह ने कहा कि अपने विराट मीडिया तंत्र और बाजार तंत्र द्वारा साम्राज्यवाद जनता के नायकों और उनके विचारों को विद्रूप बनाकर प्रस्तुत कर रहा है। जिससे नयी पीढ़ी उनकी स्मृतियों से प्रेरणा न ग्रहण कर सके। उन्होंने आगे कहा कि वैचारिक आक्रमणों का कारगर प्रत्युत्तर देना क्रान्तिकर्म का एक जरूरी हिस्सा है।

इतिहास विभाग के प्रोफेसर डॉ० शेखर पाठक ने टिहरी रियासत के खिलाफ संघर्ष में 28 वर्ष की उम्र में शहीद हुए नागेन्द्र सकलानी का जिक्र करते हुए कहा कि आज शोषण-उत्पीड़न के खिलाफ संघर्ष करने वाले शहीद जननायकों की विरासत को भुलाने की चेष्टाएं हो रही हैं। ऐसे दौर में, जनसंघर्षों की विरासत को सहेजना और उसे आगे बढ़ाना प्रगति चेता बुद्धिजीवियों एवं बेहतर भविष्य के लिए संघर्षरत लोगों का जरूरी दायित्व है।

'आह्वान कैम्पस टाइम्स' के सम्पादक मुकुल श्रीवास्तव ने कहा कि आज भगत सिंह के विचारों के वाहक छात्रों-युवाओं के कन्धों पर यह ऐतिहासिक जिम्मेदारी है कि वे आज की दुनिया की सच्चाइयों की ठीक-ठीक पहचान करें और भारतीय क्रान्ति की ठोस रणनीति-रणकौशल और नारे विकसित करें। उन्होंने कहा कि उपनिवेशवाद विरोधी संघर्ष में यदि स्वराज्य का नारा भारतीय जनता की मुक्ति का नारा था तो आर्थिक नवउपनिवेशवाद के मौजूदा दौर में क्रान्तिकारी लोक स्वराज्य भारतीय जनता के मुक्तिसंघर्ष का नया नारा है जिसे व्यापक स्तर पर प्रचारित-प्रसारित करने की जरूरत है।

भगत सिंह की जेल नोट बुक की चर्चा करते हुए दायित्वबोध मंच के ललित सती ने कहा कि देश का मेहनतकश अवाम भगतसिंह की विचारधारा का परचम थामकर ही भूमण्डलीकरण की नयी गुलामी से अपनी मुक्ति कर सकता है। परिवर्तनकामी छात्र संगठन के के० के० बोरा ने भूमण्डलीकरण के मौजूदा दौर में समाज पर नयी उपभोक्तवादी संस्कृति की जकड़न की चर्चा करते हुए कहा कि आज छात्रों-युवाओं को भगत सिंह की क्रान्तिकारी विचारधारा का व्यापक प्रचार-प्रसार करने के लिए "खेतो-खलिहानों' कल कारखानों तक जाना होगा।

विचार गोष्ठी में आइसा के शशि भूषण और हिमांशु पाण्डे एवं विक्रम ने भी अपने विचार व्यक्त किये। गोष्ठी का विषय परिवर्तन 'दिशा' के देवेन्द्र प्रताप और संचालन के चारुचन्द्र और धन्यवाद ज्ञापन श्वेता ने किया। गोष्ठी आरम्भ होने से पूर्व 'दिशा' कार्यकर्ताओं ने क्रान्तिकारी समूह गान प्रस्तुत किया। गोष्ठी स्थल पर भगत सिंह के विचारों पर आधारित एक पोस्टर प्रदर्शनी भी लगायी गयी थी। इन कार्यक्रमों में 'दिशा' की आशा विष्ट, प्रेमा विष्ट, चन्द्र मोहन एवं धीरेन्द्र आदि ने भी शिरकत किया।

प्रस्तुति : चारुचन्द्र